पंचम अध्याय

"उपसंहार"

पंचम अध्याय

उपसंहार

आजादी के बाद जितने भी साहित्यकार हमारे सामने आये, उनमें से कमलेश्वरजी अग्राणी रहे हैं। कहानीकार कमलेश्वर और उपन्यासकार कमलेश्वर इन दो रूपों में वे चर्चित रहे हैं। कमलेश्वरजी का प्रारंभिक जीवन संघर्ष से परिपूर्ण रहा है। उन्होंने कई प्रकार की नौकरियाँ की। फिर भी साहित्य-सृजन में कभी कमी नहीं आयी।

कमलेश्वरजी का व्यक्तित्व बड़ा ही सशक्त रहा है। उन्होंने अपने युग के सत्य को अपने साहित्य में उजागर किया है। उनका अंदाज-ए-बयान कुछ अलग किस्म का रहा है। जीवन की तमाम अच्छाइयों और बुराइयों का लेखा-जोखा उनके उपन्यासों में देखा जा सकता है।

कमलेश्वरजी एक ऐसे उपन्यासकार हैं जिनके अधिकतर उपन्यासों पर हिन्दी में सफल फिल्में बनी हैं। जहाँ वे एक कहानीकार के रूप में हमारे सामने आते हैं, वहाँ दूसरी ओर वे कहानी-आलोचक के रूप में भी जाने जाते हैं। उसी प्रकार एक कहानी सम्पादक के रूप में भी वे उतने ही चर्चित रहे हैं। उन्होंने कई पत्रिकाओं के सम्पादन का सफलतापूर्वक काम निभाया है। कमलेश्वरजी ने नाटक भी प्रस्तुत किए हैं। कुछ यात्रा संस्मरण भी प्रस्तुत किए हैं।

कमलेश्वरजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करने के बाद यह बात स्पष्ट हो जाती है कि कमलेश्वरजी सबसे पहले एक बहुत ही अच्छे इन्सान

हैं, बाद में सब कुछ। उनका व्यक्तित्व तो एक सशक्त साहित्यकार का है। उनके व्यक्तित्वों के कई आयाम देखे जा सकते हैं। कमलेश्वरजी ने जिस तरह की जिन्दगी को जिया, उसी तरह का उनका साहित्य रहा है। जीवन का यथार्थ उनके साहित्य में देखा जा सकता है।

कमलेश्वरजी का सबसे पहला उपन्यास है "एक सड़क सत्तावन गलियाँ" जिसने कमलेश्वरजी को एक श्रेष्ठ उपन्यासकार साबित कर दिया। एक सौ पच्चीस पन्नों का यह उपन्यास सन 1957 में प्रकाशित हुआ। इसकी एक खास बात यह है कि यह उपन्यास बहुत-ही संक्षिप्त होने पर भी अपने-आप में यह बड़ा महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। इसमें मैंनपुरी कस्बे के सामाजिक, आर्थिक और वैयक्तिक जीवन का यथार्थ चित्रण किया गया है। मूलतः यह सामाजिक उपन्यास है। कमलेश्वरजी का जन्म स्थान मैनपुरी होने के कारण मैनपुरी के जीवन की प्रामाणिक जानकारी कमलेश्वरजी ने प्रस्तुत की है। इस उपन्यास के अंतर्गत वहाँ के लोगों की आशाएँ-निराशाएँ, दास-विलास, राजनीति, नाटक मण्डली, किराए के नेता आदि बहुत सारी बातों का यथार्थ चित्रण किया गया है। कमलेश्वरजी ने अपने पात्रों के बारे में प्रामाणिक जानकारी प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। सरनाम, रंगीले, बाजामास्टर, पंडित आदि पुरूष पात्र हैं और बंशी, हेम और कमला नारी पात्र हैं। हरिजन आन्दोलन, साम्प्रदायिक तनाव, झूठी नेतागिरी आदि का वर्णन इसमें प्रस्तुत हुआ है। "एक सड़क सत्तावन गलियाँ" में कोमल और कठोर भावों के साथ-साथ अभिव्यक्ति हुई है। इस उपन्यास के माध्यम से कमलेश्वरजी ने गागर में सागर भर देने का काम किया है।

उपन्यास यात्रा का उनका दूसरा पडाव है "डाक बंगला"। प्रस्तुत उपन्यास में कमलेश्वरजी ने "इरा" नाम की युवती के त्रासदी का चित्रण किया है। डाक बंगला में आर्थिक समस्या दूसरी समस्याओं का आधार लेकर उद्घाटित

हुई है। कश्मीर यात्रा के दौरान वह अपनी कहानी तिलक से कह देती है। एक तरह से "इरा" का मानस मंथन कमलेश्वरजी ने किया है। विमल वह पहला पुरूष है, जिसने उसके साथ धोखा किया था। फिर एक के बाद एक ऐसे तीन पुरूष उसकी जिन्दगी में आते हैं। पर अफसोस की बात है कि इनमें से एक भी उसे अंतिम प्यार दे नहीं पाता। बतरा के साथ उसकी तो जैसे नई जिन्दगी शुरू होती है। पर "इरा" जब गर्भवती रहती है, तब बतरा उसका गर्भपात करता है। कुछ दिनों बाद बतरा डाक्टर चन्द्रमोहन के साथ इरा को आसाम भेज देता है। जहाँ पर उन दोनों का विवाह भी होता है। मगर अफसोस। इरा विधवा हो जाती है।

"डाक बंगला" में कमलेश्वरजी ने काम भावना का मनोवैज्ञानिक धरातल पर चित्रण किया है।

कमलेश्वरजी की उपन्यास यात्रा का तीसरा पडाव है "लौटे हुए मुसाफिर"। साम्प्रदायिकता की समस्या को लेकर लिखा गया यह उपन्यास श्रेष्ठ माना गया है। देश-विभाजन के समय जो खून-खराबा हुआ उसका यथार्थ चित्रण इसमें देखा जा सकता है। "लौटे हुए मुसाफिर" उन मासूम लोगों की कहानी जो, साम्प्रदायिकता की लहर में बहते गये। वास्तव में ये रोजी-रोटी की तलाश में निकले हुए मुसाफिर थे। साई, सत्तार, नसीबन, सलमा आदि पात्रों का यथार्थ चित्रण कमलेश्वरजी ने किया है। बँटवारे के दिनों कुछ लोग तो पाकिस्तान चले गये पर कुछ जा नहीं पाये। कुछ लौटकर चले आये। जो चले आये उनको नसीबन पुरानी निशानियाँ दिखा रही थी।

कमलेश्वरजी की उपन्यास यात्रा का चौथा पडाव है "समुद्र में खोया हुआ आदमी"। इसमें उन्होंने एक परिवार के बिखर जाने का यथार्थ वर्णन चित्रित किया है। निम्न-मध्यवर्गीय समाज और उनकी सामाजिक समस्याओं

का यह जीता-जागता और सजीव चित्र है। दरअसल यह उपन्यास परिवारों की टूटन की समस्या को लेकर प्रस्तुत किया है।

इस उपन्यास में श्यामलाल, बीरन, रम्मी, तारा और समीरा इन सबकी अपनी-अपनी परेशानियाँ हैं। श्यामलाल कुछ बनने के अरमान लिए दिल्ली चले जाते हैं। पर बात बन नहीं पाती। दिल्ली में ट्रान्सपर्ट कंपनी में क्लर्क की नौकरी कर लेते हैं। पर एक दिन इसी नौकरी से भी उन्हें हाथ धोना पड़ता है। परिवार को संभालना भी उनके लिए मुश्किल हो जाता है। ऐसी हालत में उनकी सारी आशाएँ बीरन पर ही टिकी हुई है। लेकिन बीरन बड़ा होने पर नौसेना में दाखिल हो जाता है और थोड़े ही दिनों के अंदर समुद्र में खो जाता है। परिवार में बिखराव का दौर शुरू होता है। फिर तारा की हरवंस के साथ शादी और समीरा का नर्स बन जाना देखा जा सकता है।

उपन्यास यात्रा का पाँचवा पडाव है "तीसरा आदमी" यह उपन्यास भी चर्चित हुआ। इसमें कमलेश्वरजी ने बताया है कि अगर भूल से भी कभी पति-पत्नी के बीच जब कोई "तीसरा आदमी" आता है, तब बने हुए रिश्ते भी टूट जाते हैं। "मैं" की पत्नी "चित्रा" इन दोनों के बीच सुमन्त आ जाता है। तब से "मैं" के मन में शक की दीवार खड़ी हो जाती है और परिवार टूट जाता है।

उपन्यास यात्रा का छठा पड़ाव है "काली आँधी"। "काली आँधी" कमलेश्वरजी का एक सफल उपन्यास है। इसमें एक असफल दाम्पत्य की करुण कहानी का चित्रण है। यह उपन्यास आकार से छोटा होते हुए भी जीवन के प्रति विशाल दृष्टिकोण इसमें दिखाई देता है। आज के जीवन में भ्रष्टाचार और राजनीति ने किस प्रकार प्रवेश किया है इसका सही चित्रण इसमें किया है।

"काली आँधी" की नायिका "मालती" राजनीति में अभूतपूर्व सफल बन जाती है। इसमें मालती पूँजीवादी व्यवस्था का प्रतिक है। जग्गी बाबू इसके विरोधी हैं। राजनीति में मालती सफल होती है लेकिन पारिवारिक जीवन में हमेशा असफल ही होती है। इतना कि उसे अपनी बेटी लिली से भी अलग होना पड़ा।

कमलेश्वरजी की उपन्यास यात्रा का सौंतवा और अंतिम पडाव है "आगामी अतीत" यह उपन्यास काफी चर्चित हुआ। जिस पर "मोसम" नामक फिल्म भी बनी है। कमलेश्वरजी ने प्रेम समस्या का चित्रण इस उपन्यास में किया है।

कमलेश्वरजी ने इस उपन्यास में कमलबोस और चंदा के सम्बन्धों को प्रस्तुत करते हुए "चांदनी" का बड़ा ही प्रभावपूर्ण चित्रण किया है। चांदनी एक वेश्या बन जाती है। चंदा की वेटी चांदनी का चरित्र चित्रण हिन्दी उपन्यास साहित्य में बेमिसाल बन पड़ा है।

यह सच है कि कमलेश्वरजी का प्रत्येक उपन्यास समस्या प्रधान उपन्यास है। "एक सड़क सत्तावन गलियाँ" कमलेश्वरजी का एक ऐसा उपन्यास है, जिसमें हमे सामाजिक समस्या के दर्शन होते हैं। प्रस्तुत उपन्यास में कमलेश्वरजी ने मैनपुरी कस्बे का यथार्थ चित्रण किया है। इस उपन्यास के बाजामास्टर, सरनामसिंह, रंगीले, बंसिरी आदि हर पात्रों की अपनी-अपनी अलग सामाजिक तथा आर्थिक समस्याएँ हैं। इस छोटे से कस्बे में भी साम्प्रदायिक तनाव बढ़ता है। मास्टर हबीब, निर्मोही और बाजामास्टर के सपनों का टूट जाना पाठकों को द्रवित कर देता है। सरनामसिंह, बाजामास्टर आदि पात्रों के माध्यम से कमलेश्वरजी ने जीवन संघर्ष को प्रस्तुत किया है।

"डाक बंगला" में आर्थिक समस्या दूसरी समस्याओं का आधार लेकर उद्घाटित हुई है। इसमें प्रेम समस्या उभरकर हमारे सामने आती है। इस उपन्यास में लेखक ने "इरा" नामक एक बदनसीब युवती का चित्रण किया है। "इरा" एक ऐसी युवती है, जो सच्चा प्यार पाने के लिए तड़पती है, लेकिन उसे अंत तक सच्चा प्यार मिलता नहीं। "इरा" की जिन्दगी में जितने भी पुरूष आये, सभी ने उसके साथ सिर्फ खिलवाड ही किया। कोई भी उसे सच्चा प्यार दे नहीं पाया। इसीलिए "इरा" भीतर से टूट जाती है। "इरा" की इसी छटपटाहट को कमलेश्वरजी ने इस उपन्यास में चित्रित किया है।

उनके सभी उपन्यासों में कुछ न कुछ समस्या हमें दिखाई देती है। ये सभी समाज के कारण ही निर्माण होती है। उनके "आगामी अतीत" उपन्यास में कमलेश्वरजी ने वेश्या-समस्या का चित्रण किया है। जहाँ इस उपन्यास में एक ओर प्रेम समस्या है, वहाँ दूसरी ओर वेश्या समस्या भी दिखाई देती है ये सभी समस्याएँ समाज के कारण ही निर्माण होती है। कमलबोस और चंदा के संबंधों को प्रस्तुत करनेवाला यह उपन्यास भी बड़ा चर्चित रहा। वादा करके भी कमलबोस चंदा के साथ विवाह कर नहीं सके। कमलबोस का इंतजार करते-करते चंदा पागल हो गयी और एक रात उसने अचानक दम तोड़ दिया। इसी बीच बहुत-सी घटनाएँ घटित हो गई। "चांदनी" चंदा की बेटी है। उस पर एक हत्यारा बलात्कार करता है और वह उसी दिन से वेश्या बनकर चंपाबाई के कोठे पर चली जाती है।

"समुद्र में खोया हुआ आदमी" उपन्यास कमलेश्वरजी का सामाजिक तथा आर्थिक समस्या प्रधान उपन्यास है। इस अध्याय के अंतर्गत सिर्फ सामाजिक समस्याओं का ही अंकन किया है। दरअसल यह उपन्यास परिवारों की टूटन को प्रस्तुत करता है। समाज मानो एक समुद्र है, जिसमें रोजमर्रा की सामाजिक

समस्याएँ हैं और इन सारी त्रस्त सामाजिक समस्याओं में आज का आदमी खो गया है। वह वापस लौटेगा या नहीं इसका कुछ पता नहीं। इसी के आधार पर यह उपन्यास है।

निम्न-मध्यवर्गीय समाज और उनकी सामाजिक समस्याओं का यह चित्रण है।

"तीसरा आदमी" उपन्यास में प्रेम समस्या का सजीव चित्रण किया है। दरअसल "तीसरा आदमी" कमलेश्वरजी का बड़ा ही चर्चित उपन्यास है। पति-पत्नी के बीच जब कोई तीसरा आदमी आता है, तब इनके रिश्ते में फासले किस प्रकार बढ़ जाते हैं, इसका चित्रण इस उपन्यास में हुआ है। "तीसरा आदमी" उपन्यास की नायिका है "चित्रा" और उसका पति है "मैं"। सुमन्त "मैं" का दूरदराज का रिश्तेदार है। यह इन दोनों के बीच आने के कारण इन पति-पत्नी के सबंध किस प्रकार बिगड़ते हैं इसका यथार्थ चित्रण कमलेश्वरजी ने इस उपन्यास में किया है।

साम्प्रदायिकता की समस्या का चित्रण कमलेश्वरजी ने "लौटे हुए मुसाफिर" उपन्यास में बखुबी किया है। कमलेश्वरजी ने इस उपन्यास में आये परिवर्तनों को प्रस्तुत किया है। "चिकवों की बस्ती" इस उपन्यास का केन्द्रबिंदु है। आज़ादी से पूर्व चिकवों की बस्ती के लोग चाहे हिन्दु हो या चाहे मुसलमान दोनों बड़े प्यार से रहते थे। उनमें भाईचारा था। दोनों सम्प्रदाय के लोग एक दूसरे के समारोह में बड़े प्यार से शामिल होते थे। 1945 का वक्त आया। भीतर-ही-भीतर एक नफरत की आग सुलगने लगी। नफरत की आग ने बस्ती को निगल लिया था और यह बस्ती उजड़ गई। इसका यथार्थ चित्रण इस उपन्यास में चित्रित किया है।

सारांशतः यही कि कमलेश्वरजी ने अपने "एक सड़क सत्तावन गलियाँ" से लेकर "आगामी अतीत" तक अपने उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं के साथ-साथ साम्प्रदायिक, प्रेम, तथा वेश्या आदि बहुत सारी समस्याओं का चित्रण किया है। उपर्युक्त सभी प्रकार की समस्याएँ सामाजिक समस्या के अंतर्गत आती हैं।

कमलेश्वरजी के "एक सड़क सत्तावन गलियाँ" से "आगामी अतीत" तक सभी उपन्यास समस्या प्रधान उपन्यास है। खास तौर से देखा जाय तो कमलेश्वरजी का "समुद्र में खोया हुआ आदमी" उपन्यास में कमलेश्वरजी ने आर्थिक समस्याओं का चित्रण किया है। आर्थिक समस्याओं के साथ-साथ राजनीतिक समस्या का भी चित्रण कमलेश्वरजी के "काली आँधी" उपन्यास में देखने को मिलता है। आर्थिक परिस्थिति जर्जर होने के कारण निम्न-मध्यवर्ग के लोगों को बहुत-सी आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। शहर में रहनेवाले निम्न-मध्यवर्ग के लोगों को कौन-कौनसी आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है इसका यथार्थ चित्रण इनके उपन्यासों में है। उसके साथ ही साथ आज के जीवन में भ्रष्टाचार और राजनीति ने किस प्रकार प्रवेश किया है इसका भी चित्रण "काली आँधी" उपन्यास में हमें देखने को मिलता है।

वैसे देखा जाय तो कमलेश्वरजी का "समुद्र में खोया हुआ आदमी" उपन्यास में प्रथमतः आर्थिक समस्याएँ दिखाई देती हैं। इस उपन्यास में सभी जगह आर्थिक अभाव के कारण किस प्रकार की समस्याएँ सामने आती हैं इसका यथार्थ चित्रण किया है। इस उपन्यास में पारिवारिक आर्थिक समस्या प्रधान बन चुकी है। "समुद्र में खोया हुआ आदमी" इस उपन्यास में मध्यवर्गीय परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। श्यामलाल की नौकरी छूट जाती है और उनका एक मात्र बेटा बीरन पर ही सारी आशाएँ निर्भर हैं। लेकिन वह बड़ा होकर नौसेना

में दाखिल हो जाता है और कई दिनों के अंदर ही बीरन समुद्र में खो जाता है। इसका चित्रण इस उपन्यास में दिखाई देता है।

कमलेश्वरजी के "आगामी अतीत" उपन्यास में भी आर्थिक समस्या का चित्रण हुआ है। कमलबोस वादा करके भी चंदा के साथ शादी नहीं करता। वह एक रईस की बेटी से ब्याह करता है। इधर चंदा कमलबोस का इंतजार करते करते पागल हो गई उसी समय चंदा को भी बहुत सारी आर्थिक समस्याएँ निर्माण हो गई थी। चंदा की बेटी चांदनी पर एक हत्यारा बलात्कार करता है। वह वेश्या बनकर सीधी चंपाबाई के कोठे पर चली जाती है। वेश्याओं की ही बहुत सारी आर्थिक समस्या होती हैं। इसका चित्रण "आगामी अतीत" उपन्यास में दिखाई देता है।

कमलेश्वर के "डाक बंगला" उपन्यास में प्रेम समस्या के साथ-साथ पुनर्विवाह की समस्या, अनमेल ब्याह समस्या तथा आर्थिक समस्या आदि बहुत-सी समस्याओं का चित्रण किया हुआ दिखाई देता है। इरा विवाहित होते हुए भी डॉ॰चंद्रमोहन के साथ विवाह करती है। डॉ॰चंद्रमोहन की उम्र पचपन साल की थी तब वे इरा से ब्याह करते हैं। यह अनमेल ब्याह की समस्या दिखाई देती है। इरा जब बतरा के यहाँ रहती तब उसकी तनख्वाह बिल्कुल बच जाती। इससे इरा की आर्थिक स्थिति खराब थी यह दिखाई देता है। कमलेश्वरजी के "डाक बंगला" में कम रूप में क्यों न हो आर्थिक समस्या दिखाई देती है।

"एक सड़क सत्तावन गलियाँ" में कमलेश्वरजी ने आर्थिक समस्याओं का चित्रण किया है। बाजामास्टर, रंगीले, सरनामसिंह, बंसिरी, शिवराज आदि पात्रों की बहुत सारी आर्थिक तथा सामाजिक समस्याएँ हैं इसका हुबहू चित्रण लेखक ने इस उपन्यास में किया है।

कमलेश्वरजी का "काली आँधी" उपन्यास राजनीतिक है। इसकी जो समस्याएँ हैं इसको कमलेश्वरजी ने बहुत ही अच्छे ढंग से चित्रित किया है। राजनीतिक दृष्टि से यह उपन्यास काफी चर्चित है। भ्रष्ट राजनीति पर कमलेश्वरजी ने करारा व्यंग्य किया है। इस उपन्यास के दो पात्र मालती और जग्गी बाबू पति-पत्नी हैं। मालती को राजनीति में गहरी दिलचस्पी है। जग्गी बाबू को यह बात अच्छी नहीं लगती। फलतः दोनों के बीच संघर्ष शुरू हो जाती है और एक असफल दाम्पत्य जीवन किस प्रकार नष्ट हो जाता है। मालती जब राजनीति में प्रवेश करती है, तब उसे अभूतपूर्व सफलता मिलती है। मालती पूँजीवादी व्यवस्था का प्रतिक है जो अपने हित और स्वार्थ के लिए आर्थिक दृष्टि से पिछडे हुए वर्ग का शोषण करती है। गरीब लोगों की कमजोरी का जितना हो सके फायदा उठाती है। यह जग्गी बाबू को बिल्कुल पसंद नहीं है। इसलिए मालती अपने पारिवारिक जीवन में असफल हो जाती है इसका यथार्थ चित्रण इस उपन्यास में चित्रित किया है।

सारांशतः यह कहा जा सकता है कि कमलेश्वरजी का उपन्यास साहित्य समस्या प्रधान है। कमलेश्वरजी की सभी उपन्यासों की समस्याएँ आज भी दिखाई देती हैं इसमें संदेह नहीं है। इन सारी समस्याओं को चित्रित करना कमलेश्वरजी का प्रमुख उद्देश्य है।